इकाई 10 हिन्दी में पदबंध संरचना

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 पदबंध का स्वरूप
10.2.1 पदबंध से तात्पर्य
10.2.2 पदबंध तथा पद
10.2.3 पदबंध तथा उपवाक्य
10.2.4 पदबंध तथा निकटस्थ अवयव
10.3 पदबंध का संरचनात्मक वर्गीकरण
10.3.1 पदबंध एक "रचना" के रूप में
10.3.2 अंत:कैंद्रित रचना से तात्पर्य
10.3.3 अंत:कैंद्रित रचनाओं के प्रकार
10.3.4 बहिर्कैंद्रित रचना से तात्पर्य
10.3.5 बहिर्कैंद्रित रचना : भेद-प्रभेद
10.4 पदबंधों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण
10.4.1 प्रकार्यात्मक वर्गीकरण से तात्पर्य
10.4.2 संज्ञा पदबंध
10.4.3 सर्वनाम पदबंध
10.4.4 विशेषण पदबंध
10.4.5 क्रिया विशेषण पदबंध
10.4.6 क्रिया पदबंध
10.5 सारांश
10.6 शब्दावली
10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
10.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- पदबंध की संकल्पना समझा सकेंगे,
- पद, पदबंध तथा उपवाक्य का अंतर समझा सकेंगे,
- अंत:कैंद्रित तथा बहिर्केन्द्रित रचना के अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे तथा उनके प्रकारों का परिचय दे सकेंगे,
- हिन्दी के पदबंधों की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

"पद" के विषय में आपको इकाई 5 में बताया गया था तथा स्पष्ट किया गया था कि पद की रचना केवल एक शब्द से होती है। जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह पहले "पद" बनता है। जब इस पद के साथ अन्य कई घटक आकर जुड़ जाते हैं या आबद्ध हो जाते हैं तो वह पूरी रचना वाक्य में वही प्रकार्य करने लगती है जो वह पद कर रहा था। ऐसी आबद्ध इकाई को ही "पदबंध" कहा जाता है। वाक्य में पदबंध का विशेष महत्व होता है क्योंकि यह उपवाक्य से छोटी इकाई होता है। *पदबंधों से मिलकर ही उपवाक्यों का निर्माण होता है।*

वाक्य में कुछ निर्धारित व्याकरणिक प्रकार्य होते हैं जिनको पदबंध पूरा करते हैं, अतः पदबंधों की सत्ता केवल वाक्य के अंतर्गत ही होती है। वाक्य से बाहर पदबंध की संकल्पना नहीं की जा सकती।

इस प्रकार पद यदि एक शब्द है तो पदबंध "शब्द समूह"। इस दृष्टि से वाक्य में जितने प्रकार के पद होते हैं उतने ही प्रकार के पदबंध भी होते हैं।

पदबंध में चूँकि एक से अधिक घटक होते हैं, अतः पदबंध को एक "रचना" (Construction) माना जाता है। "रचना" से तात्पर्य है–"एक से अधिक घटकों के संयोग द्वारा निर्मित"। भाषाओं में रचनाएँ प्रायः दो प्रकार की होती हैं–अंतःकेंद्रित और बहिर्केन्द्रित।

प्रस्तुत इकाई में आप पदबंध तथा उसकी रचनाओं की प्रमुख विशेषताओं, उनके प्रकारों आदि का अध्ययन हिन्दी के संदर्भ में विस्तार से करेंगे।

10.2 पदबंध का स्वरूप

10.2.1 पदबंध से तात्पर्य

इकाई 5 में आपको बताया गया था कि वाक्य में शब्द जब प्रयुक्त होते हैं तब "पद" बनकर प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार वाक्य की रचना विभिन्न प्रकार के पदों के संयोग से होती है। *जब वाक्य में एक से अधिक पद परस्पर मिलकर या बंधकर एक इकाई बनाते हैं तो उस संयुक्त इकाई को "पदबंध" कहा जाता है।* जैसे–"लड़का जाता है" वाक्य में लड़का एक पद है। परंतु जब हम कहते हैं–"छोटा लड़का जाता है" तो यहाँ "छोटा लड़का" एक पदबंध का कार्य करता है।

पदबंधों का अस्तित्व वाक्य में ही होता है। वाक्य के बाहर पदबंध की संकल्पना नहीं की जा सकती। *वाक्य में अनेक पदबंधों के मिलने से उपवाक्यों की रचना होती है।*

यह तो आप जानते ही हैं कि प्रत्येक वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया, पूरक, अव्यय आदि इकाइयों का स्थान निश्चित होता है। इन निश्चित स्थानों पर संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रिया आदि शब्द आकर वाक्य में निश्चित प्रकार्य करते हैं। अर्थात् संज्ञा शब्द वाक्य में कर्ता या कर्म के स्थान पर आ सकते हैं, क्रिया शब्द क्रिया अथवा पूरक के स्थान पर आ सकते हैं। इस प्रकार वाक्य में कुछ निश्चित "प्रकार्य स्थान" होते हैं और इन प्रकार्य स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द प्रयुक्त होते रहते हैं। वाक्य के इन *निश्चित प्रकार्य-स्थानों पर यदि एक शब्द प्रयुक्त होता है तब वह "पद" कहलाता है और यदि शब्द समूह प्रयुक्त होता है तो वह पदबंध कहलाता है।*

जैसे–	**कर्ता**	**कर्म**	**क्रिया**
(1)	लड़का	किताब	पढ़ा रहा है।
(2)	आपका लड़का	अपनी किताब	पढ़ रहा है।
(3)	आपका छोटा लड़का	अपनी नई किताब	पढ़ रहा है।
	संज्ञा पद		क्रिया पद

ऊपर के वाक्यों में आप देख रहे हैं कि वाक्य (1) में कर्ता के स्थान पर "लड़का" शब्द आ रहा है तथा कर्म के स्थान पर "किताब" तथा क्रिया के स्थान पर "पढ़ रहा है"। ये तीनों ही इकाइयाँ अपने-अपने स्थान पर "पद" कही जाती हैं। "लड़का" तथा "किताब" संज्ञा पद हैं तथा "पढ़ रहा है" क्रिया पद। वाक्य (2) तथा वाक्य (3) में कर्ता तथा कर्म के स्थान पर आने वाले इन पदों में कुछ और शब्द जोड़े गए हैं। परंतु वाक्य में जहाँ "लड़का" का प्रयोग होता है उसी स्थान पर "आपका लड़का" तथा "आपका छोटा लड़का" का प्रयोग हो रहा है और ये परस्पर मिलकर वाक्य में वही कार्य कर रहे हैं जो कि "लड़का" "पद" कर रहा था। अतः ये सभी "पदबंध" हैं। इसी प्रकार कर्म के स्थान पर भी "अपनी किताब" तथा "अपनी नई किताब" पूरी एक इकाई के रूप में "किताब" के स्थान पर आ रहे हैं। अतः ये सभी "पदबंध" की कोटि की इकाइयाँ हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि पदबंध की रचना एक से अधिक शब्दों के संयोग से होती है।

10.2.2 पदबंध तथा पद

इकाई 5 तथा इकाई 6 में आपको शब्द तथा पद में अंतर करते हुए बताया गया था कि शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाइयाँ हैं और इनमें रूप साधक प्रत्यय लगाकर वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाया जाता है। आपको यह भी बताया गया था कि वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही "पद" है। इस परिभाषा के अनुसार "लड़का" एक स्वतंत्र शब्द है परंतु "लड़का जाता है" वाक्य में "लड़का" एक पद है जो शून्य प्रत्यय जोड़कर बनाया गया है। शून्य प्रत्यय के बारे में आप इकाई 5 में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में विभिन्न प्रकार्य-स्थानों (कर्ता, कर्म, क्रिया आदि) पर प्रयुक्त होने वाली इकाई यदि एक "शब्द" के रूप में है तो वह "पद" कही जाएगी। लेकिन यदि इस "पद" में एक से अधिक शब्द आकर मिल जाते हैं जैसे–"मेरा लड़का", "मेरा छोटा लड़का" आदि, तो इस बंधी हुई या "बद्ध इकाई" को "पदबंध" कहा जाएगा। वाक्य में इस पूरी इकाई को "पद" के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है।

इस दृष्टि से वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया, पूरक आदि स्थानों पर यदि एक शब्द प्रयुक्त होता है तो वह "पद" है और एक से अधिक शब्द मिलकर एक इकाई के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब उन्हें "पदबंध" कहा जाएगा।

अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि "पद" और "पदबंध" में प्रकार्य की दृष्टि से कोई अंतर नहीं होता। जो प्रकार्य वाक्य में "लड़का" पद द्वारा संपन्न किया जाता है वही "मेरा लड़का" या "मेरा छोटा लड़का" के द्वारा संपन्न किया जाता है।

10.2.3 पदबंध तथा उपवाक्य

यह तो आप अब जान ही गये होंगे कि पदबंध की सत्ता वाक्य के अंतर्गत ही संभव है। वाक्य के बाहर पदबंध का कोई अस्तित्व नहीं। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि वाक्य में *अनेक प्रकार के पदबंधों के परस्पर संयोग से वाक्य या उपवाक्य की रचना होती है। है। इस दृष्टि से वाक्य में पदबंध उपवाक्य से छोटी इकाई है।*

उपवाक्य तो एक प्रकार का वाक्य ही होता है। उपवाक्य मिश्र अथवा संयुक्त वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे–

(4) वह लड़का, <u>जो कल यहाँ आया था</u>, बीमार पड़ गया।
(5) राम ने आज्ञा दी, <u>कि वह कार न ले जाए</u>।

वाक्य (4) में दो उपवाक्य हैं–"वह लड़का बीमार पड़ गया" तथा "जो कल यहाँ आया था"। इसी प्रकार वाक्य (5) में भी दो उपवाक्य हैं–"राम ने आज्ञा दी" तथा "कि वह कार न ले जाए"।

इस प्रकार *प्रत्येक उपवाक्य में क्रिया अनिवार्य रूप से रहती है जबकि पदबंध में क्रिया का होना कोई अनिवार्यता नहीं है।* नीचे के वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

(6) वह लड़की <u>जो नीली साड़ी पहने थी</u>, चली गयी।
(7) <u>नीली साड़ी वाली</u> लड़की चली गई।

वाक्य (6) में दो उपवाक्य हैं–"वह लड़की चली गई" तथा "जो नीली साड़ी पहने थी"। परंतु वाक्य (7) में एक ही वाक्य है जिसमें "जो नीली साड़ी पहने थी" उपवाक्य को "नीली साड़ी वाली" पदबंध में परिवर्तित कर दिया गया है।

इस प्रकार "पदबंध" तथा "उपवाक्य" दो भिन्न संकल्पनाएँ हैं। इनमें हमें भेद करके चलना चाहिए।

10.2.4 पदबंध तथा निकटस्थ अवयव

पदबंधों में एक से अधिक आने वाली इकाइयों (शब्दों) को पदबंध के "अवयव" या "घटक" कहा जाता है। जैसे–"मेरी लड़की" पदबंध में "मेरी" तथा "लड़की" दो घटक या अवयव हैं।

प्रायः पदबंधों में आने वाले एक से अधिक अवयव परस्पर अर्थ की दृष्टि से एक-दूसरे के साथ बड़ी गहराई से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए नीचे के वाक्य पर ध्यान दीजिए–

(8) आपका बेटा आज नहीं आएगा।

वाक्य (8) में "आपका" तथा "बेटा" घटक एक-दूसरे के साथ अर्थ की दृष्टि से जिस घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं, उतनी घनिष्ठता से "बेटा" और "आज" शब्द नहीं जुड़े हुए हैं। अतः "आपका बेटा" परस्पर मिलकर एक इकाई के रूप में "पदबंध" माने जाएंगे। इस प्रकार "पदबंध" में आने वाले घटक या अवयव एक-दूसरे से बड़ी निकटता के साथ जुड़े होते हैं इसलिए *इन अवयवों या घटकों को "निकटतम अवयव" या निकटस्थ अवयव" कहा जाता है।*

पदबंधों के संदर्भ में इन निकटस्थ अवयवों या घटकों का अपना विशिष्ट स्थान है जिनकी चर्चा यहाँ आवश्यक है।

10.3 पदबंध का संरचनात्मक वर्गीकरण

10.3.1 पदबंध एक "रचना" के रूप में

चूँकि प्रत्येक पदबंध की रचना एक से अधिक घटकों/अवयवों द्वारा होती है, अतः यह माना जाता है कि "पदबंध" एक "रचना" है क्योंकि "*रचना का अर्थ ही है–जिसका निर्माण एक से अधिक इकाइयों या घटकों से मिलकर हुआ हो।* नीचे के वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

(9) मेरा कुत्ता बीमार है।
(10) लड़के ने खाना खाया।

इन दोनों वाक्यों में "मेरा कुत्ता" तथा "लड़के ने" दो रचनाएँ हैं जिनका निर्माण दो-दो घटकों से हुआ है। "मेरा कुत्ता" में पहला घटक "मेरा" विशेषण है और "कुत्ता" संज्ञा तथा "लड़के ने" रचना में "लड़के" संज्ञा रूप है तथा "ने" कारकीय चिह्न या परसर्ग। उपर्युक्त दोनों उदाहरणों के आधार पर हम अंतःकेंद्रित तथा बहिर्केंद्रित रचनाओं की चर्चा करेंगे। **जैसा कि बताया गया है कि रचनाएँ मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं–अंतःकेन्द्रित तथा बहिर्केन्द्रित। ये दोनों क्या हैं तथा इनमें आपस में क्या अंदर है,** आइए इसके विषय में ऊपर दिए गए दोनों उदाहरणों (9-10) के आधार पर जानकारी प्राप्त करें।

10.3.2 अंतःकेन्द्रित रचना (Endocentric Construction) से तात्पर्य

जैसा कि अंतःकेन्द्रित शब्द से ही पता चल रहा है, *उन रचनाओं को अंतःकेन्द्रित कहा जाता है जिनका केंद्र रचनाओं के अंदर होता है।* **अब प्रश्न उठता है कि किसी भी रचना में केंद्र क्या होता है और इसका पता कैसे चलता है?**

किसी भी रचना का यदि विवरण देना हो तो दो बातें देखनी चाहिए–

(i) उस रचना में आए अलग-अलग घटक किस शब्द वर्ग (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) के सदस्य हैं?

तथा (ii) पूरी रचना किस शब्द वर्ग की सदस्य है?

उदाहरण के लिए "मेरा कुत्ता बीमार है" वाक्य में यदि "मेरा कुत्ता" रचना का विवरण देना हो तो हम बता सकते हैं कि–

(i) इस रचना में प्रयुक्त पहला घटक "मेरा" सार्वनामिक विशेषण है तथा "कुत्ता" संज्ञा वर्ग का सदस्य है।

तथा (ii) पूरी रचना "मेरा कुत्ता" संज्ञा शब्द-वर्ग की ही सदस्य है क्योंकि वाक्य में जिस स्थान पर "कुत्ता" शब्द प्रयुक्त होता है जैसे–"कुत्ता बीमार है" उसी स्थान पर "मेरा कुत्ता" भी प्रयुक्त किया जा सकता है। प्रकार्य की दृष्टि से भी वाक्य में जो कार्य "कुत्ता" करता है वही "मेरा कुत्ता" भी पूरी इकाई के रूप में कर रहा है। अतः "मेरा कुत्ता" रचना का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

[[मेरा] विशेषण [कुत्ता] संज्ञा] संज्ञा वर्ग

यदि किसी रचना में इस प्रकार की स्थिति मिले कि रचना के घटकों में से किसी *एक घटक का शब्द वर्ग वही हो जो पूरी रचना का है तो उस घटक को उस रचना का "केंद्र" कहते हैं।* "मेरा कुत्ता" रचना के दूसरे घटक "कुत्ता" का शब्द वर्ग पूरी रचना के शब्द वर्ग के समान है। अर्थात् दोनों संज्ञा-वर्ग के सदस्य हैं। इस समानता के कारण इस रचना में "कुत्ता" घटक को "केंद्र" या शीर्ष माना जाएगा।

एक अन्य उदाहरण देखिए–

(ii) गरम दूध मत पीओ।

इस वाक्य में "गरम दूध" रचना का विवरण इस प्रकार से दिया जाएगा–

[[गरम] [दूध]
विशेषण संज्ञा] संज्ञा वर्ग

अर्थात् पूरी रचना संज्ञा शब्द वर्ग की है तथा दूसरे घटक "दूध" का शब्द वर्ग भी संज्ञा ही है। अतः इस रचना में "दूध" पूरी रचना का केंद्र माना जाएगा। इस तरह से ऊपर बताई गई सभी रचनाओं में उनका केंद्र या शीर्ष रचनाओं के अंदर ही विद्यमान है। अतः *उन सभी रचनाओं को, जिनका केंद्र रचनाओं के अंदर होता है, अंतःकेंद्रित रचना कहते हैं।*

अतःकेंद्रित रचना में कम से कम एक घटक केंद्र अवश्य होगा तथा शेष घटक उसकी विशेषता बताने वाले होंगे। *विशेषता बताने वाले घटकों को "विशेषक" कहा जाता है।*

10.3.3 अंतःकेंद्रित रचनाओं के प्रकार

(1) **सविशेषक पदबंध**– वे रचनाएँ जिनमें एक केंद्र तथा शेष घटक विशेषक होते हैं, सविशेषक पदबंध कहलाते हैं। जैसे–"गर्म चाय" में "चाय" केंद्र है तथा "गम" विशेषक। "मीठी गर्म चाय" में दो सविशेषक हैं "मीठी" तथा "गर्म" और चाय केंद्र है।

(2) **समवर्गीय पदबंध**– समवर्गीय पदबंधों में दो या दो से अधिक केंद्र होते हैं तथा विशेषक नहीं होता। इस प्रकार के पदबंध बीच में "और", "या", "अथवा" आदि संयोजकों से जुड़े रहते हैं। जैसे–(1) "राम और श्याम" (2)"चाय या दूध"

(3) **समानाधिकरण पदबंध**– इन पदबंधों में भी दो केंद्र होते हैं तथा दोनों ही समान अधिकार वाले होते हैं। दोनों में कौन-सा प्रमुख है, यह बताना कठिन होता है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर इन दोनों में से कोई एक अकेला ही पूरे पदबंध का प्रकार्य कर सकता है, जैसे–

पर्वतराज हिमालय

वाक्य में यह भी कहा जा सकता है कि

1. तेनसिंह ने पर्वतराज पर विजय पाई।

तथा यह भी कहा जा सकता है कि

2. तेनसिंह ने हिमालय पर विजय पाई।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण हो सकते हैं–

1) समिति अध्यक्ष श्री वर्मा
2) भारत की राजधानी दिल्ली आदि

10.3.4 बहिर्केंद्रित रचना (Exocentric Construction) से तात्पर्य

जो भी रचना अंतःकेंद्रित नहीं है, वह बहिर्केंद्रित कहलाती है। *अर्थात् इन रचनाओं में कोई भी घटक केंद्र नहीं होता।* इसका अर्थ यही हुआ कि रचना के घटकों में किसी घटक का शब्द-वर्ग पूरी रचना के शब्द-वर्ग से समानता नहीं रखता। उदाहरण के लिए–

(2) राम ने खाना खाया।

वाक्य (12) में "राम ने" रचना का विवरण प्रस्तुत करना हो तो इस प्रकार दिया जा सकता है कि पहला घटक राम "संज्ञा" वर्ग का सदस्य है तथा "ने" वर्ग परसर्ग (कारकीय चिहन) है पूरी रचना का शब्द वर्ग इन घटकों में से किसी भी घटक के वर्ग से समानता नहीं

रखता, क्योंकि वाक्य में जिस स्थान पर "राम" का प्रयोग हो सकता है उस स्थान पर "राम ने" को स्थानापन्न नहीं किया जा सकता, जैसे

1. राम सोता है।
* 2. राम ने सोता है।
* 3. राम ने जाएगा।

अत: "राम ने" रचना में कोई घटक केंद्र नहीं है। इस प्रकार केंद्र न होने के कारण यह पदबंध अंत:केंद्रित नहीं है, और जो रचना अंत:केंद्रित नहीं है वह निश्चित ही बहिर्केंद्रित होगी।

10.3.5 बहिर्केंद्रित रचना : भेद-प्रभेद

(1) **परसर्गीय रचनाएँ या अक्ष-संबंधी पदबंध**

इन रचनाओं में कोई केंद्र नहीं होता तथा एक घटक जो प्राय: संज्ञा होता है पूरी रचना में अक्ष या धुरी की तरह होता है। इसका घटक प्राय: परसर्ग होता है। परसर्ग एक ओर अक्ष से जुड़ा रहता है तथा दूसरी ओर वाक्य के अन्य घटकों के साथ अक्ष के संबंध को व्यक्त करता है, जैसे–

1) राम ने खाना खाया।
2) कमरे में मत आओ।
3) मोहन के लिए किताब लाओ।
4) लड़की को सोने दो।

इन उदाहरणों में "राम ने" रचना में "राम" रचना का अक्ष है तथा "ने" संबंध बताने वाला परसर्ग जिसे "संबंधक" कह सकते हैं। इसी प्रकार "कमरे में" रचना में "कमरे" अक्ष है और "में" संबंधक।

(2) **गुंफित पदबंध**

कुछ बहिर्केंद्रित पदबंधों के घटक आपस में इस प्रकार गुंफित रहते हैं कि उनमें न तो "अक्ष" और "संबंधक" जैसा संबंध ही दिखाई देता है और न "केंद्र" और "विशेषक" जैसा।

अर्थ की दृष्टि से इस रचना के सारे घटक एक ही परिवार के सदस्य होते हैं। जैसे–

"पढ़ रहा है", "लिखेगा", "करना चाहिए था"
"जा चुका होगा" आदि।

वस्तुत: हिन्दी के क्रिया पदबंध इसी कोटि में आते हैं। इन पदबंधों में आने वाले सभी घटक परस्पर गुंफित हैं तथा एक ही वर्ग (क्रिया) के सदस्य भी हैं। उदाहरण के लिए "पढ़ रहा है" पदबंध में "पढ़" मूल धातु है, "रह" सातत्य बोधक पक्ष का सूचक है, "आ" एकवचन पुल्लिंग का सूचक है तथा "है" वर्तमान काल का सूचक।

इस चर्चा के बाद आइए देखें कि संरचनात्मक वर्गीकरण की तुलना में पदबंधों का प्रकार्यात्मक पक्ष क्या है? इसे जानने के लिए हमें पदबंधों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण करना होगा तथा उसके प्रत्येक वर्ग पर चर्चा करके यह देखना होगा कि पदबंधों का वाक्य में प्रकार्यात्मक पक्ष कैसे निश्चित किया जा सकता है। आइए, इस पर एक-एक करके विचार करें।

अभ्यास 1

क) नीचे दिए गए कुछ कथन सही हैं और कुछ गलत। सही कथन के आगे (✓) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए।

(1) **पदबंध और उपवाक्य में कोई भेद नहीं होता।** सही/गलत

(2) **पदबंध वाक्य में प्रयुक्त होकर ही अपना संपूर्ण अर्थ दे पाते हैं।** सही/गलत

(3) **पदबंध की रचना एक से अधिक शब्दों के संयोग से होती है।** सही/गलत

(4) **जिनका केंद्र रचनाओं के अंदर होता है उन्हें अंत:केंद्रित रचना कहते हैं।** सही/गलत

(5) बहिर्केंद्रित रचनाओं में कोई भी घटक केंद्र नहीं होता। सही/गलत

ख) नीचे दी गई संकल्पनाओं को 8-10 पंक्तियों में उदाहरण सहित समझाइए–

(1) पद और पदबंध

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

(2) अंतःकेंद्रित तथा बहिर्केंद्रित रचना

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

(3) समवर्गीय पदबंध

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

(4) समानाधिकरण पदबंध

....
....
....
....
....

....

....

....

....

....

(5) सविशेषक पदबंध

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

10.4 पदबंधों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण

10.4.1 प्रकार्यात्मक वर्गीकरण से तात्पर्य

वाक्य में पदबंधों का कोई न कोई प्रकार्यात्मक पक्ष भी होता है। कभी वे संज्ञा का प्रकार्य करते हैं तो कभी सर्वनाम का, कभी विशेषण का तो कभी क्रिया का। इन्हीं विभिन्न प्रकार्यों के आधार पर पदबंधों को पाँच वर्गों में बाँटा जाता है–

1. संज्ञा पदबंध
2. सर्वनाम पदबंध
3. विशेषण पदबंध
4. क्रिया विशेषण पदबंध (या अव्यय पदबंध)
5. क्रिया पदबंध

अब प्रत्येक प्रकार के पदबंध के विषय में आपको विस्तार से बताया जाएगा–

10.4.2 संज्ञा पदबंध

जो पदबंध वाक्य में संज्ञा का कार्य करते हैं उन्हें "संज्ञा पदबंध" कहते हैं। जैसे–"बात करने वाला बच्चा गिर गया" वाक्य में "बात करने वाला बच्चा" पदबंध 'संज्ञा पदबंध' है क्योंकि यह पूरा पदबंध वाक्य में "बच्चा" संज्ञा का स्थानापन्न भी कर सकता है और वाक्य में वही प्रकार्य करता है जो कि "बच्चा गिर गया" वाक्य में "बच्चा" पद करता है।

संज्ञा पदबंध की सबसे बड़ी पहचान तो यही है कि उसमें कम से कम एक संज्ञा अवश्य होती है तथा इस संज्ञा के साथ कुछ विशेषक भी हो सकते हैं और नहीं भी जैसे–

1) मेरा बच्चा
2) मेरा छोटा बच्चा
3) मेरा एक छोटा बच्चा

इन सभी पदबंधों में अंतिम घटक "बच्चा" तो संज्ञा है, शेष घटक विशेषक। जबकि "लड़का अथवा लड़की" या "मोहन या सोहन" जैसे पदबंधों में दो संज्ञाएँ हैं तथा एक संयोजक चिह्न। इन पदबंधों में "विशेषक" नहीं है। अतः *संज्ञा पदबंध में एक संज्ञा तो अनिवार्य रूप से होती है तथा विशेषक का प्रयोग वैकल्पिक होता है।*

इस प्रकार संज्ञा पदबंध सदैव अंतःकेंद्रित रचना है तथा उसमें जो केंद्र होता है वह सदैव संज्ञा होता है। जिन संज्ञा पदबंधों में एक से अधिक संज्ञाएँ होती हैं, वे सभी उस पदबंध की केंद्र कहलाती हैं जैसे—''मोहन या सोहन'' अथवा ''कार और साइकिल'' में दोनों संज्ञाएँ ही केंद्र हैं।

हिन्दी के संज्ञा पदबंध की कुछ विशेषताएँ

(1) हिन्दी में संज्ञा पदबंध में विशेषक प्रायः संज्ञा के पूर्व लगते हैं, जैसे—

1) काला कुत्ता
2) सुंदर साड़ी
3) दूध वाली दुकान

(2) कभी-कभी कुछ संज्ञा पदबंध ऐसे भी होते हैं जिनमें बल देने के लिए विशेषक संज्ञा के बाद भी आ जाता है। ऐसी अभिव्यक्तियाँ आपको मौखिक भाषा में ही अधिकतर सुनाई देंगी, जैसे—

(13) तुमने *साड़ी* **बहुत सुंदर** पहनी है।
(14) *चाय* इतनी *मीठी* है कि मैं नहीं पी सकता।
(15) दर्द *इतना तेज़* है कि मैं बात भी नहीं कर सकता।

(3) संज्ञा पदबंधों में प्रयुक्त होने वाले विशेषकों में विभिन्न प्रकार के विशेषक आ सकते हैं, जैसे—

(क) *गुणवाचक विशेषक रूप*—
छोटा बच्चा, काला कुत्ता, सफ़ेद साड़ी, मोटा आदमी, पतली गली, आदि।

(ख) *कृदंत रूप*—
दौड़ता हुआ बच्चा, चलती चक्की, भीगते बच्चे, गिरे हुए पैसे, आदि।

(ग) *वाला रूप*—
चलने वाली गाड़ी, पढ़ने वाला बच्चा, देखने वाले लोग, साड़ी वाली लड़की, दूध वाला भइया आदि।

(घ) *सार्वनामिक रूप*—
मेरा बेटा, आपकी किताब, किसी का पर्स, कुछ लोग, कोई बहाना, वह स्त्री आदि।

(ङ) *संख्या/परिणामवाची रूप*—
चालीस पुस्तकें, तीनों बच्चे, पहला आदमी, थोड़ा दूध, बहुत लोग आदि।

(च) *का-विशेषक रूप*—
शीला का बेटा, खेल का मैदान, हमारा विद्यालय, चाय की दुकान आदि।

(4) संज्ञा पदबंध का प्रयोग वाक्य में उन सभी स्थानों पर किया जा सकता है जहाँ पर सामान्य शब्द का प्रयोग होता है। यह तो आप जानते ही हैं कि हिन्दी के वाक्यों में संज्ञा का प्रयोग कर्ता के स्थान पर, कर्म के स्थान पर तथा पूरक के रूप में किया जा सकता है जैसे—

1. कर्ता के स्थान पर — लड़की पढ़ रही है।
2. कर्म के स्थान पर — लड़की किताब पढ़ रही है।
3. पूरक के स्थान पर — लड़की डॉक्टर है।

उपर्युक्त तीनों ही वाक्यों में संज्ञा शब्दों (पदों) के स्थान पर संज्ञा पदबंध का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे : नीचे दिए गए उदाहरण देखिए—

1. *मेरी लड़की* पढ़ रही है। (कर्ता)
2. लड़की *अंग्रेज़ी की किताब* पढ़ रही है। (कर्म)
3. लड़की *आँखों की* डॉक्टर है। (पूरक)

(5) हिन्दी में कर्ता या कर्म के स्थान पर जब संज्ञा पदबंध प्रयुक्त होते हैं तो उनके अंत में यदि आवश्यकता हो तो—ने, को, से आदि कारक चिह्न भी लग सकते हैं, जैसे—

1. मेरे भाई साहब *ने* सभी बच्चों *को* मिठाई बाँटी।
2. राम के भाई *से* चला नहीं जाता।

10.4.3 सर्वनाम पदबंध

सर्वनामों से तो आप परिचित ही हैं। जो पदबंध वाक्य में सर्वनाम के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं उन्हें सर्वनाम पदबंध कहते हैं। वाक्य में सर्वनाम पदबंध भी वही कार्य करते हैं जो कि सर्वनाम करता है।
जैसे–

1. वह अपने घर चला गया। (सर्वनाम पद)
2. वह बेचारा अपने घर चला गया। (सर्वनाम पदबंध)

सर्वनाम पदबंध भी एक अंत:केंद्रित रचना है और इसका केंद्र एक सर्वनाम होता है। हिन्दी के संज्ञा पदबंध में जहाँ संज्ञा प्रायः विशेषकों के बाद आती है या विशेषक संज्ञा के पूर्व लगते हैं वहाँ सर्वनाम पदबंधों में प्रायः सर्वनाम पहले आता है तथा विशेषक बाद में।
जैसे–

1. वह बेचारी करती भी क्या!
2. वह अभागा कुछ भी न कर पाया।
3. कोई गरीब कहाँ से खिलाए बच्चों को?
4. मैं दुखिया और करता भी क्या?
5. वह तकदीर का मारा कहाँ जाता?

हिन्दी में सर्वनाम पदबंध की विशेषताएँ

(1) कभी-कभी हिन्दी में विशेषक सर्वनाम के पहले भी आ जाता है।
जैसे–
1. तकदीर का मारा वह, कहाँ जाता?
2. बेचारी वह, करती भी तो क्या करती?

इसके अतिरिक्त कभी-कभी सर्वनाम पदबंध दो हिस्सों में बँटकर आता है जैसे–
1. उस बेईमान को कौन नहीं जानता?
2. उस अभागे से गलती हो गई।

इन वाक्यों में वाक्य 1 में "उस....को" सर्वनाम है तथा "बेईमान" विशेषक तथा वाक्य 2 में "उस....से" सर्वनाम है तथा "अभागे" विशेषक।

(3) हिन्दी में सर्वनाम पदबंधों की संख्या बहुत सीमित है।

(4) वाक्य में सर्वनाम पदबंध तथा संज्ञा पदबंध दोनों एक ही प्रकार्य करते हैं अर्थात् दोनों के व्याकरणिक प्रकार्य समान होते हैं। अतः वाक्य विश्लेषण के संदर्भ में सर्वनाम पदबंध को भी संज्ञा पदबंध के अंतर्गत शामिल कर लिया जाता है।

10.4.4 विशेषण पदबंध

जो पदबंध वाक्य में विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं उन्हें विशेषण पदबंध कहा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं, वाक्य में विशेषण किसी न किसी संज्ञा की विशेषता बताते हैं। विशेषण पदबंध भी वाक्य में वही प्रकार्य करते हैं जो विशेषण करता है, अर्थात् ये भी किसी संज्ञा की ही विशेषता बताते हैं। जैसे–

1) बहुत सुंदर
2) सबसे छोटा
3) लगभग तीन सौ
4) अत्यंत कठिन

विशेषण पदबंध भी एक अंत:केंद्रित रचना है जिसका केंद्र एक विशेषण होता है। विशेषण पदबंध में आने वाले अन्य अवयव अथवा घटक उस "केंद्र" घटक की विशेषता बताते हैं अतः अन्य घटक उस केंद्र के विशेषक का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए "सबसे छोटा" में "छोटा" घटक केंद्र है तथा "बहुत" उसका विशेषक।

हिन्दी में विशेषण पदबंध की प्रमुख विशेषताएँ

(1) हिन्दी में विशेषण पदबंध वाक्यों से स्वतंत्र रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है तथा संज्ञा पदबंध के एक विशेषक के रूप में भी। उदाहरण के लिए–

स्वतंत्र पदबंध के रूप में

(i) वह लड़का बहुत बेईमान निकला।
(ii) आप तो बहुत मालदार हैं।
(iii) वह थोड़ा लालची है।
(iv) यह साड़ी बहुत सुंदर है।
(v) तुम इतने ईमानदार हो, मैं नहीं जानता था।

इन सभी वाक्यों में रेखांकित सभी पदबंध विशेषण पदबंध हैं तथा वाक्य में स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

संज्ञा पदबंध के विशेषक के रूप में

संज्ञा पदबंध में यदि एक से अधिक विशेषक आते हैं तो वे परस्पर मिलकर एक इकाई के रूप में विशेषण पदबंध की रचना करते हैं। उदाहरण के लिए "मेरा काला कुत्ता" पूरी रचना संज्ञा पदबंध है, परंतु "मेरा काला" विशेषण पदबंध है जो एक इकाई के रूप में संज्ञा की विशेषता बता रहा है। इस विशेषण पदबंध में आने वाले सभी घटक परस्पर मिलकर संज्ञा पदबंध के विशेषक बनकर आ रहे हैं। इस प्रकार के विशेषण पदबंधों (वि.प.) के कुछ उदाहरण देखिए–

1. [[तुम्हारा छोटा] भाई कहाँ जा रहा है?
   वि.प. वि.प.] सं.प.

2. तुम [[एक किलो मीठा] दूध ले आओ।
   वि.प. वि.प.]
   सं.प. सं.प.

3. [[मेरी चार हरे रंग की] चादरें फट चुकी हैं।
   वि.प. वि.प.]
   सं.प. सं.प.

(2) यद्यपि हिन्दी में अधिकतर विशेषणों का वाक्य में प्रयोग स्वतंत्र रूप में तथा संज्ञा पदबंध के विशेषकों के रूप में हो सकता है परंतु कुछ विशेषण ऐसे हैं जो केवल स्वतंत्र पदबंध के रूप में ही प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे– "तैयार", "निहाल" आदि। ये विशेषण वाक्य में स्वतंत्र पद अथवा स्वतंत्र पदबंध के रूप में ही प्रयुक्त हो सकते हैं जैसे–

1. लड़की तैयार है।
2. लड़की पूरी तरह तैयार है।
3. मेरी माँ तुम पर निहाल हो गई।
4. मेरी माँ तुम पर इतनी निहाल हो गई कि मैं बता नहीं सकता।

लेकिन इन विशेषणों को संज्ञा पदबंध के विशेषक के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। नीचे के वाक्य अशुद्ध माने जाएँगे–

5. तैयार लड़की आ गई।
6. निहाल माँ है।

(3) हिन्दी के विशेषण पदबंधों में केंद्र के विशेषक घटक कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे–

(क) अधिकता बताने वाले–
1) बहुत सुंदर
2) अत्यंत कठिन
3) ज़्यादा मुश्किल

(ख) तुलनावाची–
1) मुझसे छोटा
2) किसी से कमज़ोर
3) इससे सुंदर
4) सबसे बेईमान

(ग) *उपमावाची*–
1) तुम जैसा ईमानदार
2) कमल जैसे नेत्र
3) हिरन जैसी आँखें

(घ) *लगभगवाची*–
1) लगभग सभी
2) कोई तीस-चालीस

10.4.5 क्रिया विशेषण पदबंध

आप जानते हैं कि क्रिया-विशेषण शब्द वे शब्द हैं जो वाक्य में क्रिया की विशेषता बताते हैं जैसे–धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी आदि। प्रायः क्रिया की विशेषता (धीरे-धीरे), सादृश्य, (पागल-सा), परिमाण (बहुत), क्रम (बारी-बारी से), गुण (अच्छा), दिशा (इधर-उधर), स्थान (यहाँ), काल (कल), निषेध (मत), अवधि (कल तक), कारण (इसलिए), साधन (पैदल), तथा तुलना (उससे कम) आदि अनेक प्रकार की हो सकती है। *वाक्य में पदबंध क्रिया-विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त होकर वही प्रकार्य कर सकते हैं जो कि क्रिया विशेषण पदबंध करते हैं।* अतः दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है वाक्य में क्रिया विशेषण पदबंध वही प्रकार्य करते हैं जो क्रिया पदबंध करता है जैसे–

1) स्थानवाची – मेरा कार्यालय उस मकान की पहली मंज़िल पर है।
2) दिशावाची – वह इस तरफ़ अंधेरे में गया है।
3) अवधि – मैं इस माह के अंत तक पहुँचूँगा।
4) रीति – वह तेज़ी से कार द्वारा निकल गया।

हिन्दी के क्रिया विशेषण पदबंधों की प्रमुख विशेषताएँ

(i) हिन्दी में क्रिया विशेषण पदबंध की रचना प्रायः संज्ञा तथा परसर्ग/अव्यय के संयोग से होती है। जैसे–

1. वह ऊपर वाले कमरे में सोता है।
2. एक आदमी मेरे घर के बाहर सोता है।
3. मैं दिल्ली में बहुत आराम से रहा।

(ii) कुछ स्थितियों में परसर्ग का लोप भी हो जाता है। जैसे–

1. हम कल घर चले गए थे।
2. मैं आज रात नहीं आ सकूँगा।
3. वह चार दिन दफ़्तर नहीं आया।

(iii) हिन्दी में कृदन्त रूपों (जैसे हँसते हुए, रोते हुए, पढ़कर, चलकर आदि) से भी क्रिया विशेषण पदबंध की रचना होती है जैसे–

1. वह ज़ोर से हँसते हुए बोला।
2. हम पूरी फ़िल्म देखकर आए।
3. बच्चा तेज़ी से दौड़कर आया।
4. तुम आराम से बैठकर क्यों नहीं पढ़ते?

(iv) दो या दो से अधिक घटकों से मिलकर जो क्रिया विशेषण पदबंध बनते हैं उनकी रचना बहिर्केन्द्रित होती है क्योंकि उनमें कोई भी घटक "केंद्र" नहीं होता। जैसे–

1. ऊपर की मंज़िल पर
2. तेज़ी से दौड़कर
3. कल शाम को चार बजे

(v) अधिकतर क्रिया विशेषण पदबंधों का प्रयोग वाक्य में वैकल्पिक होता है। यदि क्रिया-विशेषण पदबंधों को वाक्य से निकाल दिया जाए तो भी वाक्य की मूल संरचना खंडित नहीं होती। जैसे–

1. वह अपनी कार से आया ⟶ वह आया।
2. वह ज़ोर से हँसते हुए बोला ⟶ वह बोला।

(vi) वाक्य में जिस प्रकार की सूचनाएँ क्रिया-विशेषण शब्दों (पदों) द्वारा प्राप्त होती हैं वही सूचनाएँ क्रिया विशेषण पदबंधों से भी प्राप्त होती हैं। इस दृष्टि से हिन्दी में क्रिया विशेषण पदबंध मुख्य रूप से निम्नलिखित सूचनाएँ देते हैं–

1. स्थानवाची – छत के ऊपर, घर के चारों ओर, मेज़ के ऊपर
2. समयवाची – आज शाम को, कल तीन बजे, आज से तीन दिन बाद, तीन माह पहले
3. रीतिवाची – बहुत परेशानी से, ज़ोर से हँसते हुए, बड़े ध्यान से
4. कारणवाची – भूख के कारण, प्यास के मारे, रातभर पढ़ते-पढ़ते
5. प्रयोजनवाची – चाय के लिए, खरीदने के लिए
6. करणवाची – मोटे डंडे से, अपनी लाठी से, तेज़ चाकू से
7. भाव-अभाववाची – के बावजूद, के होते हुए भी

10.4.6 क्रिया पदबंध

अन्य व्याकरणिक इकाइयों, जैसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, अव्यय आदि की तुलना में क्रिया शब्दों की स्थिति थोड़ी भिन्न होती है। जहाँ अन्य शब्द वाक्य में पद के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, वहाँ क्रिया शब्द वाक्य में पदबंध के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं क्योंकि वाक्य में जब किसी क्रिया का प्रयोग किया जाता है तब उसमें मुख्य या मूल क्रिया, सहायक क्रिया (होना), काल, पक्ष, वृत्ति, लिंग, वचन आदि सभी की सूचना देने वाले प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इस तरह वाक्य में प्रयुक्त क्रिया एक पदबंध के रूप में सामने आती है। उदाहरण के लिए जाना क्रिया का प्रयोग वाक्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रिया पदबंध के रूप में देखा जा सकता है। जैसे–

1. लड़का जाता है।
2. लड़का जा रहा है।
3. लड़का जा चुका है।
4. लड़का गया।
5. लड़का जाएगा।
6. लड़का जा चुका होगा।

इसके अलावा हिन्दी में दो क्रियाएँ परस्पर मिलकर संयुक्त क्रियाओं के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं, जैसे–

1. लड़का चला गया।
2. लड़का चला जा रहा है।
3. वह रोज़ मेरे यहाँ आ जाता है।

हिन्दी के क्रिया पदबंधों की प्रमुख विशेषताएँ

(1) हिन्दी में सामान्य रूप से क्रिया पदबंध की रचना मुख्य क्रिया (जैसे पढ़, लिख, चल, सो) तथा सहायक क्रिया (है, था) के संयोग से होती है।

(2) हिन्दी में सामान्यतः क्रिया का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है।

(3) हिन्दी में क्रिया पदबंध बहिर्केन्द्रित रचना है तथा यह गुंफित रचना है क्योंकि क्रिया पदबंध में एक से अधिक इकाइयाँ परस्पर गुंफित रहती हैं।

(4) क्रिया पदबंध का जो प्रमुख भाग होता है तथा जिससे क्रिया के मूल अर्थ का पता चलता है उसे मुख्य क्रिया कहते हैं जैसे–सो-, पढ़-, चल-, लिख-, उठ-, बैठ-, आदि।

(5) हिन्दी में मुख्य क्रिया के अंतर्गत कई प्रकार के घटक आ सकते हैं। जैसे–

क) **सरल धातु :** इसमें क्रिया के अकर्मक (सो, दौड़), सकर्मक (खा, लिख

तथा प्रेरणार्थक (पिला–पिलवा, करा–करवा आदि) तीनों ही रूप आ सकते हैं।

ख) **सामासिक धातु :** दो धातुओं के समास से बना क्रिया रूप जो एक इकाई के रूप में आता है, जैसे–पढ़-लिख, उठ-बैठ, चल-फिर आदि।

ग) **नामिक क्रिया :** वह क्रिया जिसका पहला अंश संज्ञा या विशेषण होता है तथा दूसरा अंश कोई क्रिया होती है जैसे–

दान दे (ना) संज्ञा + क्रिया	*भूख* लग (ना) संज्ञा + क्रिया
सुंदर लग (ना) विशेषण + क्रिया	अच्छा लग (ना) विशेषण + क्रिया

घ) **संयुक्त क्रिया :** जो दो क्रियाओं के संयोग से बनती है। इसमें प्रथम क्रिया मूल धातु का कार्य करती तथा दूसरी रंजक क्रिया का। जैसे–

आ जा (ना), गिर पड़ (ना), चल दे (ना) आदि।

(6) क्रिया के वे अंश जो समस्त व्याकरणिक सूचनाएँ (जैसे–काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य आदि) देते हैं, *सहायक क्रिया* के अंतर्गत आते हैं–

हिन्दी में -ता है, -था, -एगा, -या आदि रूप सहायक क्रियाओं में आते हैं।

जैसा कि अभी उल्लेख किया गया था कि क्रिया पदबंधों की स्थिति थोड़ी भिन्न है, अत: इस विषय पर अगली इकाई (इकाई-11) में विस्तार से चर्चा की जाएगी तथा अन्य व्याकरणिक इकाइयों से इसका संबंध स्थापित किया जाएगा।

अभ्यास 2

(क) नीचे दिए कथनों में कुछ कथन सही हैं और कुछ गलत। सही कथन के आगे (✓) तथा गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए–

1) "नीले रंग की किताब" में "नीले रंग" संज्ञा पदबंध है। सही/गलत
2) संज्ञा पदबंध में कम से कम एक संज्ञा अवश्य होती है। सही/गलत
3) संज्ञा पदबंध में विशेषक का प्रयोग वैकल्पिक नहीं होता। सही/गलत
4) सर्वनाम पदबंध वाक्य में वही कार्य करता है, जो सर्वनाम करता है। सही/गलत
5) वाक्य में संज्ञा पदबंध तथा सर्वनाम पदबंध एक ही कार्य करते हैं। सही/गलत
6) "एक किलो अच्छी मिठाई ले आओ" में "एक किलो अच्छी" विशेषण पदबंध है। सही/गलत
7) वाक्य में क्रिया विशेषण पदबंध वही प्रकार्य करते हैं जो क्रिया पदबंध करता है। सही/गलत
8) क्रिया के जो अंश व्याकरणिक सूचनाएँ देते हैं, वे मुख्य क्रिया के अंतर्गत आते हैं। सही/गलत

(ख) निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (लगभग 8-10 पंक्तियों में)।

1) संज्ञा पदबंध

....
....
....
....
....
....

....
....
....
....

2) **सर्वनाम पदबंध**

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) **विशेषण पदबंध**

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

4) **क्रिया विशेषण पदबंध।**

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

10.5 सारांश

इस इकाई के अंतर्गत आपको पदबंध की संकल्पना, स्वरूप तथा उसके भेद-प्रभेदों के विषय में विस्तार से बताया गया। आपने देखा कि पदबंध वाक्य की एक महत्वपूर्ण इकाई

है। पदबंधों के माध्यम से ही वाक्य में उपवाक्यों का निर्माण होता है अतः पदबंधों का अस्तित्व वाक्य की संकल्पना के साथ ही जुड़ा हुआ है। वाक्य के अभाव में पदबंध का कोई अस्तित्व नहीं होता।

एक ओर आपको पद तथा पदबंध का अंतर बताया गया तो दूसरी ओर पदबंध और उपवाक्य का। आपने देखा कि पदबंध की रचना एक से अधिक घटकों के संयोग से होती है अतः पदबंधों का अध्ययन एक रचना के रूप में किया जाता है। इस रचना में आने वाले घटक परस्पर एक-दूसरे से बड़ी निकटता से जुड़े होते हैं अतः उनको "निकटस्थ अवयव" कहते हैं। निकटस्थ अवयव की प्रकृति तथा वाक्य में उनके प्रकार्यों के आधार पर ही पदबंध-रचना के अंतःकेंद्रित तथा बहिर्केन्द्रित दो भेद किए जाते हैं। इस इकाई में आपको अंतःकेन्द्रित तथा बहिर्केन्द्रित रचनाओं की संकल्पना तथा उनके भेद-प्रभेदों के विषय में भी जानकारी दी गई।

आपने पदबंधों के भेद-प्रभेदों—संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया-विशेषण पदबंध तथा क्रिया पदबंध के विषय में भी परिचय प्राप्त किया तथा देखा कि वाक्य में जितने प्रकार के पद होते हैं उतने ही प्रकार के पदबंध भी। आपने इस इकाई में हिंदी के सभी प्रकार के पदबंधों की प्रमुख विशेषताओं का भी अध्ययन किया।

हिन्दी में क्रिया पदबंध सबसे अधिक जटिल और गुंफित पदबंध है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस इकाई में किया गया। हिन्दी के क्रिया पदबंध का विस्तृत अध्ययन आपको अगली इकाई (इकाई 11) में कराया जाएगा।

10.6 शब्दावली

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली—

पदबंध
कृदन्त
प्रकार्य-स्थान
बद्ध इकाई
उपवाक्य
निकटतम/निकटस्थ अवयव
संरचनात्मक प्रकार्य
सार्वनामिक
परिमाणवाची

केन्द्र/शीर्ष
अंतःकेन्द्रित
बहिर्केन्द्रित
सविशेषक
समवर्गीय
समानाधिकरण
अक्ष संबंधी पदबंध
गुंफित पदबंध

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) *हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण*, सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली।
2) *हिन्दी भाषा*, डॉ० भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
3) *हिन्दी भाषा की संरचना*, भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

10.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

(क) 1) ✗ 4) ✓

2) ✓ 5) ✗
3) ✓ 6) ✓

(ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

(क) 1) ✗ 5) ✓
2) ✓ 6) ✓
3) ✗ 7) ✓
4) ✓ 8) ✗

(ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

इकाई 11 क्रिया पदबंध : काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 वाक्य के घटक
11.2.1 संज्ञा पदबंध और क्रिया पदबंध
11.3 व्याकरणिक कोटियाँ
11.3.1 संज्ञा पदबंध से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ
11.4 क्रिया पदबंध और उसके घटक
11.4.1 मुख्य क्रिया
11.4.2 सहायक क्रिया
11.5 सहायक क्रिया से संबंधित व्याकरणिक कोटियाँ
11.6 सारांश
11.7 शब्दावली
11.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
11.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- क्रिया पदबंध और संज्ञा पदबंध की संकल्पना को समझा सकेंगे,
- संज्ञा पदबंध और उससे संबंधित व्याकरणिक कोटियों का वर्णन कर सकेंगे,
- क्रिया पदबंध की मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के घटकों के बारे में जानकारी दे सकेंगे,
- क्रिया पदबंध के अंतर्गत सहायक क्रिया की वाच्य, पक्ष, वृत्ति और काल नामक व्याकरणिक कोटियों का विस्तारपूर्वक वर्णन कर सकेंगे,
- हिन्दी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था में क्रिया पदबंध और उसकी व्याकरणिक ‍टियों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम पहले आपका ध्यान वाक्य के प्रमुख घटकों की ओर दिलाएँगे। ये प्रमुख घटक हैं–संज्ञा पदबंध और क्रिया पदबंध। इन दो घटकों के बिना किसी भी पूरे वाक्य की रचना नहीं हो सकती, इसीलिए इन्हें वाक्य के अनिवार्य घटक माना जाता है। यहा हम संक्षेप में संज्ञा पदबंध और उससे संबंधित लिंग, वचन, पुरुष और कारक नामक व्याकरणिक कोटियों की चर्चा करेंगे।

इसके बाद क्रिया पदबंध और उसके घटकों के बारे में विचार किया जाएगा। क्रिया पदबंध के प्रमुख घटक हैं–मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया। इन घटकों पर विचार करते समय पहले मुख्य क्रिया के अंतर्गत सरल धातु, समस्त धातु, नाम धातु, मिश्र क्रिया और संयुक्त क्रिया के बारे में चर्चा की जाएगी तथा सहायक क्रिया के घटकों का उल्लेख किया जाएगा।

अंतिम चरण में क्रिया पदबंध की वाच्य, पक्ष, वृत्ति और काल नामक व्याकरणिक कोटियों का विस्तार से वर्णन किया जाएगा।

2) ✓ 5) ✗
3) ✓ 6) ✓

(ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

(क) 1) ✗ 5) ✓
2) ✓ 6) ✓
3) ✗ 7) ✓
4) ✓ 8) ✗

(ख) इकाई से स्वयं जाँच करें।